विचार बिन्दु

दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय होते हैं। –बुद्ध

भारत में सभी शहरी क्षेत्रों के आसपास के वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना आवश्यक है

30X30 एक वैश्विक संरक्षण पहल है, जिसका उद्देश्य 2030 तक पृथ्वी के 30 प्रतिशत भूमि और महासागरों की रक्षा करना है। यह जैव विविधता कन्वेंशन (सीबीडी) के वर्ष 2020 के बाद के वैश्विक जैव-विविधता ढांचे के तहत एक प्रमुख लक्ष्य है। भारत के लिए, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 7,935 शहर और कस्बे थे। यहाँ शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। इन शहरों और कस्बों के आसपास स्थित पेरी-अर्बन वनों की रक्षा करना पारिस्थितिक गलियारों को मजबूत करेगा, शहरी जैव-विविधता को बढ़ावा देगा और जलवायु सहनशीलता में सुधार करेगा। ये वन कार्बन भंडार के रूप में कार्य करते हैं, महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जैव-विविधता हानि को कम करते हैं। पेरी-अर्बन वनों को 30X30 रणनीति में शामिल करना समावेशी संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के साथ मेल खाता है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी और देश की अनोखी जैव-विविधता और पारिस्थितिक अखंडता के लिए एक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करना शामिल है।

पेरी-अर्बन वन-हरे भरे क्षेत्र जो शहरों के बाहरी इलाकों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्थित हैं-पारिस्थितिक जीवनरेखा हैं जो शहरीकरण के प्रतिकूल प्रभावों को कम करते हैं। ये वन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनमें कार्बन अवशोषण, जल चक्र विनियमन, जैव-विविधता संरक्षण, स्थानीय तापमान को संतुलित करना और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रकृति-आधारित समाधान के स्रोत के रूप में काम करना शामिल है।

तेजी से शहरी विस्तार के साथ, पेरी-अर्बन वन, कटाई, शहरीकरण के कारण भूमि उपयोग में बदलाव और प्रबंधन में उपेक्षा जैसी बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए, इनके बहुआयामी लाभों के प्रमाणों के आधार पर, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना और उनका प्रबंधन करना आवश्यक है।

भारत विश्व स्तर पर पेरी-अर्बन वनों की बहाली की उच्चतम संभावना वाले शीर्ष चार देशों में शामिल है, जिसमें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील भी शामिल हैं। ये चार देश पुनर्स्थापन गतिविधियों के लिए उपलब्ध वैश्विक पेरी-अर्बन क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करते हैं। अकेले भारत में लगभग 14 से 17 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऐसी पहलों के लिए उपयुक्त मानी गई है, जो जलवायु परिवर्तन से निपटने, जैव-विविधता को बढ़ावा देने और शहरी सहनशीलता में सुधार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (एस. फ्रांसिनीएटअल., नेचर सिटीज, वॉल्यूम 1, पेज 286-294, 2024)। यह वैश्विक पुनर्स्थापन प्रयासों में भारत की केंद्रीय भूमिका और लक्षित पुनर्वनीकरण गतिविधियों के माध्यम से महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और सामाजिक लाभ प्रदान करने की इसकी क्षमता को उजागर करता है।

भारत में शहरी और पेरी-अर्बन राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षण रिज़र्वों का एक व्यापक नेटवर्क है, जो जैव-विविधता संरक्षण और शहरी पारिस्थितिकी सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (मुंबई), जो 103 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के लिए एक हरा फेफड़ा है और तेंदुओं सहित विविध वन्यजीवों का घर है। इसी तरह, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान (भोपाल), 4.45 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और प्राकृतिक बाड़ों में जानवरों के साथ एक प्राणी उद्यान के रूप में कार्य करता है। गिंडी राष्ट्रीय उद्यान (चेन्नई), जो केवल 2.7 वर्ग किलोमीटर में फैला है, काले हिरण, चीतल और पक्षियों के लिए एक शहरी अभयारण्य है।

हैदराबाद में कासूब्रह्मानंद रेड्डी (केबीआर) राष्ट्रीय उद्यान, जो 1.43 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के केंद्र में स्थित एक शहरी वन है, जो उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति को संरक्षित करता है और आवश्यक पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करता है। महावीर हरीना वनस्थली राष्ट्रीय उद्यान, 14.59 वर्ग किलोमीटर में फैला है और काले हिरणों की आबादी और शिक्षा तथा मनोरंजन में अपनी भूमिका के लिए जाना जाता है। बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान (बेंगलुरु), 260.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और हाथी गलियारे और पारिस्थितिक पर्यटन सुविधाओं को जोड़ता है, जो शहरी दबावों और वन्यजीव संरक्षण के बीच संतुलन बनाता है।

चंदका-दामपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य, जो भुवनेश्वर, ओडिशा के पास स्थित है, 193.39 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और शहरी क्षेत्रों के करीब एक महत्वपूर्ण हाथी अभयारण्य है। यह मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने और जैव-विविधता को संरक्षित करने में पेरी-अर्बन संरक्षित क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित करता है। जयपुर का झालाना-अमागढ़ कंजेर्वेशन रिज़र्व, जो 32 वर्ग किलोमीटर में फैला है, अपनी बढ़ती तेंदुओं की आबादी, कार्बन संचय, भू-जल पुनर्भरण और पर्यावरण पर्यटन के लिए जाना जाता है।

हमने हैदराबाद, तेलंगाना के पास स्थित 109 शहरी और पेरी-अर्बन वनों में से एक का दौरा किया, जो 250 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है और उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन प्रजातियों के उल्लेखनीय प्राकृतिक पुनर्जनन को प्रदर्शित करता है। मजबूत संरक्षण उपायों ने जैव-विविधता की रक्षा की है, जलग्रहण क्षेत्र की स्थिति को बेहतर बनाया है और आसपास की झीलों को स्वच्छ पानी प्रदान किया है। इसी प्रकार हैदराबाद का का सूब्रह्मानंद रेड्डी (केबीआर) राष्ट्रीय उद्यान एक महत्वपूर्ण शहरी संरक्षित क्षेत्र है,जहाँ चंदन (सैंटलम एल्बम) के उल्लेखनीय प्राकृतिक पुनरुत्पादन को देखा गया है। यह मुख्य रूप से पक्षियों द्वारा बीजों के प्रसार के माध्यम से संभव हुआ है, जिसमें बुलबुल पक्षी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये पक्षी पार्क के 353 एकड़ क्षेत्र में, जिसमें संरक्षण और पर्यटन क्षेत्र दोनों शामिल हैं, बीजों को फैलाने में सहायक हैं।

भारत विश्व स्तर पर पेरी-अर्बन वनों की बहाली की उच्चतम संभावना वाले शीर्ष चार देशों में शामिल है, जिसमें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील भी शामिल हैं। ये चार देश पुनर्स्थापन गतिविधियों के लिए उपलब्ध वैश्विक पेरी-अर्बन क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करते हैं।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल शहर के लिए हरे फेफड़े का काम करता है, जैव-विविधता संरक्षण में योगदान देता है, पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देता है, और आसपास की झील के लिए जल विनियमन को बेहतर बनाता है। अपनी छोटी सीमा के बावजूद, वन विहार संरक्षण और मनोरंजन के बीच संतुलन स्थापित करता है। पारिस्थितिक संरक्षण और शहरी योजना को एकीकृत करने का उत्तम उदाहरण है।

पेरी-अर्बन वन स्थानीय जलवायु को स्थिर करने के लिए अपरिहार्य हैं, विशेष रूप से उन शहरी और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जो अत्यधिक गर्मी की चपेट में आते हैं। झालाना-अमागढ़ संरक्षण रिज़र्व इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रोफेसर आर. योसेफ और उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि पेरी-अर्बन वनभूमि सतह तापमान (LST) को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने पाया कि झालाना-अमागढ़ संरक्षण रिज़र्व के भीतर का LST, आसपास के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में सभी मौसमों में काफी कम था। यह शीतलन प्रभाव दिखाता है कि वन शहरी गर्मी द्वीपों (Urban Heat Islands) का कैसे मुकाबला करते हैं, जो अन्यथा शहरों में गर्मी से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों को बढ़ाते हैं (Forests, Vol. 13, Pages 1101, 2022)? यह निष्कर्ष घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जीवन स्तर को सुधारने के लिए भारत में शहरी और पेरी-अर्बन वनों को प्राथमिकता देने की मजबूत वकालत करता है।

शीतलन के अलावा, पेरी-अर्बन वन वैश्विक जलवायु शमन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एस. फ्रांसिनी और उनके सहयोगियों ने पाया कि विश्व स्तर पर उपयुक्त पेरी-अर्बन क्षेत्रों को पुनर्स्थापित करके 101 से 106 अरब पेड़ों के लिए स्थान उपलब्ध कराया जा सकता है, जो कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण योगदान देगा (Nature Cities, Vol. 1, Pages 286–294, 2024)?

पेरी-अर्बन वनों में निवेश पारंपरिक 'ग्रे' अवसंरचना,जैसे बांध और तटबंध, के बजाय बाढ़ नियंत्रण और जलवायु अनुकूलन के लिए एक किफायती विकल्प है। आर. मलेकनिया और उनकी टीम द्वारा किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि पेरी-अर्बन वन प्राकृतिक स्पंज के रूप में कार्य करते हैं, वर्षा जल को अवशोषित करते हैं, जल पुनर्भरण करते हैं, और शहरी बाढ़ के जोखिम को कम करते हैं (Forests, Vol. 15, 2024)? यह पारिस्थितिकी सेवा आपदा के बाद के पुनर्वास पर होने वाले आर्थिक बोझ को कम करती है और दीर्घकालिक सहनशीलता सुनिश्चित करती है।

पेरी-अर्बन वन पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ आजीविका और शीतलन के लिए ऊर्जा लागत को कम करके अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं। ऐसी सेवाएं पेरी-अर्बन वनों को संरक्षित करने के वित्तीय लाभों को रेखांकित करती हैं। पेरी-अर्बन वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करेगा और स्थानीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करेगा।

पेरी-अर्बन वन स्वच्छ हवा प्रदान करके, गर्मी के तनाव को कम करके और मनोरंजन स्थल के रूप में शहरी जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं। ये लाभ विशेष रूप से भारत के घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, जहाँ हीट-वेव और वायु प्रदूषण शहरी समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, पेरी-अर्बन वन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करते हैं। मनोरंजन स्थलों के रूप में ये वन व्यायाम और विश्राम के अवसर प्रदान करते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं।

पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना एक क्रांतिकारी नीतिगत समाधान है, जो इन वनों की सुरक्षा को संस्थागत रूप देगा और उनके पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक लाभों को पूरी तरह से प्राप्त करने की क्षमता को साकार करेगा। कंजर्वेशन रिज़र्व कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं, जो वनों को शहरी अतिक्रमण और अव्यवस्थित दोहन से बचाते हैं, साथ ही समुदाय की भागीदारी को भी सक्षम बनाते हैं। पेरी-अर्बन वनों के संरक्षण को लागू करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले,जीआईएस और रिमोट सेंसिंग उपकरणों का उपयोग करके पेरी-अर्बन वनों की पहचान और मूल्यांकन करना चाहिए, जो भूमि सतह तापमान और पारिस्थितिकी सेवाओं से संबंधित महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करेगा। दूसरे, नीतिगत और कानूनी सुधारों के माध्यम से इन क्षेत्रों को औपचारिक रूप से समय समय पर संशोधित, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अनुरूप कंजर्वेशन रिज़र्व के रूप में नामित करना आवश्यक है, जिससे इनकी दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। तीसरे, सहभागी योजना और शिक्षा के माध्यम से समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है, ताकि जन-जागरूकता बढ़ाई जा सके और स्थानीय स्तर पर संरक्षण प्रयासों में भागीदारी सुनिश्चित हो। चौथे, सीधी बुआई (बीजारोपण), असिस्टेड नेचुरल रिजनेरेशन जैसी वैज्ञानिक पुनर्स्थापन तकनीकों का उपयोग करके वनों के पुनर्स्थापन और क्षतिग्रस्त वनों को बेहतर करने में मदद मिल सकती है। अंत में, जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से पेरी-अर्बन वनों के पारिस्थितिक और सामाजिक लाभों को उजागर किया जा सकता है, जिससे नागरिकों को इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके। इन सभी प्रयासों से पेरी-अर्बन वनों का संरक्षण न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करेगा, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक लाभों में भी योगदान देगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

2025 में उच्च शिक्षा: एक प्रस्तावना

प्रो. अशोक कुमार

2025, भारत की उच्च शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष होने की आशा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के साथ, हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहे हैं जहां उच्च शिक्षा अधिक समावेशी, नवीन और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होगी।

2025 तक, हम निम्नलिखित परिवर्तनों की उम्मीद कर सकते हैं:–

1. सर्वांगीण विकास पर जोर:– कौशल विकास: केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल विकास पर भी अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

बहु-विषयक शिक्षा: छात्रों को विभिन्न विषयों का गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

शारीरिक शिक्षा और योग :- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए शारीरिक शिक्षा और योग को पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए।

2. डिजिटल शिक्षा का प्रसार:– ऑनलाइन शिक्षा: अधिक से अधिक उच्च शिक्षा संस्थान ऑनलाइन शिक्षा की पेशकश होनी चाहिए, जिससे दूर-दराज के क्षेत्रों के छात्रों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

डिजिटल संसाधन :- छात्रों को डिजिटल संसाधनों जैसे ई-पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और मंचों तक पहुंच प्रदान कीजानी चाहिए।

3. अनुसंधान और नवाचार पर जोर:– अनुसंधान संस्कृति: विश्वविद्यालयों में अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा दिया जाएगा और छात्रों को अनुसंधान परियोजनाओं में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

उद्योग-अकादमिक सहयोग: उद्योग और अकादमिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुसंधान किया जा सके।

4. समावेशी शिक्षा:– विविधता: उच्च शिक्षा संस्थानों में विविधता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि सभी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को समान अवसर मिल सके।

दिव्यांग छात्र: दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

5. स्वायत्तता और लचीलापन:– स्वायत्त संस्थान: उच्च शिक्षा संस्थानों को अधिक स्वायत्तता दी जानी चाहिए ताकि वे अपने पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को विकसित कर सकें।

लचीले पाठ्यक्रम: छात्रों को अपने करियर के लक्ष्यों के अनुसार पाठ्यक्रम चुनने की अधिक स्वतंत्रता होनी चाहिए।

6. विश्व स्तरीय शिक्षा:– अंतरराष्ट्रीय मानक: भारतीय विश्वविद्यालयों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए।

विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग: भारतीय विश्वविद्यालय विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करना चाहिए ताकि छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए एक विस्तृत तंत्र की आवश्यकता होती है जिसमें नियामक समितियां भी शामिल हैं। यह सच है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत कई नई नियामक संस्थाओं की स्थापना की जानी है, लेकिन यह प्रक्रिया समय लेने वाली होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत कुछ प्रमुख नियामक संस्थाएं जो स्थापित की जानीचाहिए हैं, उनमें शामिल हैं:–

उच्च शिक्षा आयोग: यह एक एकल नियामक निकाय है जो उच्च शिक्षा के सभी पहलुओं को नियंत्रित करेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान परिषद :– यह अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख संस्था है

राष्ट्रीय स्कूली शिक्षा बोर्ड यह स्कूली शिक्षा के लिए एक एकल बोर्ड होना चाहिए।

यह उम्मीद की जाती है कि इन नियामक संस्थाओं के गठन से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष:– 2025 तक, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में एक व्यापक परिवर्तन देखने को मिलेगा। यह परिवर्तन छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेगा और भारत को एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने में मदद करेगा।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

गंदे पानी की निकासी नहीं होने से लोग दूषित वातावरण में रहने को मजबूर

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ कस्बे के रामबास मोहल्ले में स्थित गंदे पानी की गेनाणी डिग्गी के पानी निकासी नहीं होने के कारण ओवरफ्लो हो गई तथा प्रमुख रास्ते पर गंदा पानी भर गया है। इससे लोग दूषित वातावरण में रहने को मजबूर हैं।

शनिवार को मिली जानकारी में गंदे पानी की गेनाणी डिग्गी के पानी निकासी नहीं होने के करण में कारण रास्ते के चारों तरफ गंदगी का आलम छा गया है, मोहल्ले में दूषित वातावरण बन गया। आसपास के घरों और गलियों में जलभराव की स्थिति बन गई है। आक्रोशित लोगों ने बताया कि शिकायतों के बावजूद नगर पालिका प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। लोग मजबूरन इस गंदे पानी से होकर गुजरने को मजबूर हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं उत्पन्न होने का खतरा भी बढ़ गया है।

इस संबंध में द्वारका प्रसाद प्रजापत, फेसल पहाड़खानी, जयनारायण सैनी, प्रदीप बंसल, पवन सैनी, प्रकाश शर्मा, सुरेश गोस्वामी, राधेश्याम स्वामी व विजय शर्मा आदि अनेक लोगों ने बताया कि संस्कृत पाठशाला के सामने बने पंप हाउस में लगे जनरेटर का पाइप फट जाने के कारण डिग्गी से पानी निकासी नहीं हुई, जिसके कारण डिग्गी का पानी ओवरफ्लो होकर प्रमुख रास्ते पर भर गया। आक्रोशित लोगों ने बताया कि मात्र 35 हजार रुपए का खर्च नगर पालिका प्रशासन से नहीं हो रहा है और रखरखाव के अभाव में जनरेटर खराब हो गया तथा इस प्रमुख रास्ते पर दिनभर हजारों लोगों का आवागमन बना रहता है।

गुलपुरा मोड, रैगरान मोहल्ला, खुशीपुरा मोहल्ला, बागडिया कॉलोनी, सैनी मोहल्ला, जलदाय विभाग क्षेत्र मोची कॉलोनी तथा रामबास आदि क्षेत्रों के लोगों को बाजार, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन तथा अपने निजी कार्यों से इसी रास्ते से आवागमन करते हैं। इसके अलावा स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों को भी इसी रास्ते से आना और जाना पड़ता है, लेकिन प्रमुख रास्ते पर गंदा पानी भर जाने और गंदगी का आलम होने के कारण लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है तथा मजबूरी में लोगों को गंदे पानी से गुजरना पड़ता है।

गंदे पानी की निकासी नहीं होने के कारण रास्ते में भरा गन्दा पानी परेशानी का सबब बना हुआ है।

- **गंदे पानी की निकासी नहीं होने के कारण राजगढ़ रामबास मोहल्ले में गेनाणी डिग्गी ओवरफ्लो हुई**
- **मोहल्ले के लोगों ने आक्रोश जताया, शिकायतों के बावजूद नहीं हो रही कार्रवाई**

इस मौके पर अनेक लोगों ने आक्रोश जताते हुए कहा कि आखिर इस समस्या की जिम्मेदारी कौन लेगा। मोहल्लेवासी प्रशासन से निराश हो चुके हैं और वे समझ नहीं पा रहे कि अब अपनी समस्या के समाधान के लिए किस पर विश्वास करें। शहर में गत कई महीना से सफाई व्यवस्था बिगड़ी हुई है।

श्रीगंगानगर के किन्नू की क्वालिटी में सुधार के साथ मिठास भी बढ़ी

श्रीगंगानगर, (निसं)। बांग्लादेश सरकार ने गत वर्ष भारत से भेजे जाने वाले किन्न पर आयात शुल्क 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 62 प्रतिशत कर दिया। इस कारण यहां से भेजे जाने वाले किन्नू के भाव वहां बढ़ गए हैं। इसके कारण डिमांड भी कम हो गई। बांग्लादेश में पाकिस्तान से भी किन्नू भेजा जाता है। जिले में इस बार 12500 हैक्टेयर में किन्नू के बाग हैं। इस बार लगभग 2.75 लाख एमटी किन्नू का उत्पादन हुआ है। गर्मी का दौर लंबा चलने से दिसंबर के अंतिम सप्ताह में ठंड पड़नी शुरू हुई है। इससे किन्नू की क्वालिटी में सुधार के साथ ही मिठास भी बढ़ी है। ऐसे में किन्नू का सीजन भी इस बार लंबा चलेगा। उम्मीद है कि इस बार मार्च तक आमजन को खाने के लिए किन्नू मिल सकेगा।

- **श्रीगंगानगर क्षेत्र से हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत किन्नू बांग्लादेश भेजा जाता है, लेकिन इस बार किन्नू के कारोबार पर भी इसका असर पड़ रहा है**
- **बांग्लादेश किन्नू नहीं भेजने का दूसरा कारण आयात शुल्क में बढ़ोतरी होना भी माना जा रहा है**

श्रीगंगानगर पड़ोसी देश बांग्लादेश में सरकार बदलने के बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में आई खटास का असर अब कारोबार पर भी पड़ना शुरू हो गया है। श्रीगंगानगर क्षेत्र से हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत किन्नू बांग्लादेश भेजा जाता है, लेकिन इस बार किन्नू के कारोबार पर भी इसका असर पड़ रहा है। श्रीगंगानगर के व्यापारी किन्नू इस बार बांग्लादेश नहीं भेज रहे हैं। श्रीगंगानगरी किन्नू की मिठास व अच्छी क्वालिटी के कारण देश से नहीं पड़ोसी देशों में भी खूब डिमांड रहती है। अरब देशों के साथ ही पड़ोसी देश बांग्लादेश में भी श्रीगंगानगरी किन्नू की खूब डिमांड रहती है, लेकिन बांग्लादेश में सरकार बदलने के साथ ही दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आई है। ऐसे में कारोबार पर भी इसका सीधा असर पड़ रहा है। किन्नू के सीजन नवंबर, दिसंबर व जनवरी माह में हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत माल सड़क मार्ग से बांग्लादेश भेजा जाता है, लेकिन इस बार व्यापारी भी किन्नू बांग्लादेश नहीं भेज रहे हैं। हालांकि देश के अन्य राज्यों में किन्नू की डिमांड अच्छी है और यहां से व्यापारी अन्य राज्यों में किन्नू यहां के वैक्सीनेशन व ग्रेडिंग करवाने के बाद पैकिंग कर ट्रकों से भेज रहे हैं।

किन्नू क्लब के अध्यक्ष राजकुमार जैन ने बताया कि किन्नू के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिए। पांच साल पहले तक किन्नू महोत्सव का आयोजन किया जाता था, लेकिन अब ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं होता। किन्नू के उत्पाद तैयार करने पर शोध की भी जरूरत है, जिससे कि जैम जैली से उत्पाद तैयार हो सकें। श्रीगंगानगर का किन्नू देश-विदेशों में खूब पसंद किया जाता है। इस बार आवक भी अच्छी हो रही है।

देश को घोड़ों की आठवीं नस्ल के रूप भीमथड़ी घोड़ा मिला

बीकानेर, (निसं)। राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एस सी मेहता के नेतृत्व में किए गए शोध कार्य के परिणामस्वरूप देश को घोड़ों की आठवीं नस्ल के रूप भीमथड़ी घोड़ा मिला। इस कार्य के परिणामस्वरूप भारत सरकार ने इस नस्ल के लिए गजट नोटिफिकेशन यानी भारत का राजपत्र जारी किया। अब यह भारत की घोड़ों की आठवीं गजट नोटिफाईड नस्ल हो गई है।

- **भारत सरकार ने भीमथड़ी घोड़ा नस्ल के लिए गजट नोटिफिकेशन जारी किया**

इस संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में एक समारोह आयोजित किया गया जिसमें डॉ एस सी मेहता एवं रणजीत पंवार को पारिषद के महानिदेशक एवं सेक्रेटरी, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा डॉ. हिमांशु पाठक, देश के पशु पालन कमिश्नर डॉ. अभिजीत मित्रा, उप महानिदेशक पशु विज्ञान डॉ. राघवेन्द्र भट्ट, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं उपकुलपति डॉ. त्रिवेणी दत्त एवं राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो के निदेशक डॉ. बी पी मिश्रा द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह में वि.वि. के कुलपति, निदेशक, सहायक महानिदेशक, प्रभागाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं गणमान्य जन उपस्थित थे। इस सम्बन्ध मे डॉ. मेहता ने बताया कि राजपत्र जारी होने से इस नस्ल को पालने वालों के अधिकार सुनिश्चित हो जाते हैं, इस पर समिति या संस्था बनाकर कार्य किया जा सकता है एवं इस से सरकार की कई योजनाओं से वित्तीय सहायता मिलने में भी आसानी रहती है। इस दिशा में कार्य भी आरंभ किया जा चुका है एवं इस नस्ल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु "आल इंडिया भीमथड़ी हॉर्स एसोसिएशन" का गठन रणजीत पंवार की अध्यक्षता में किया जा चुका है। डॉ. मेहता ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि क्षत्रपति शिवाजी राव महाराज की विरासत को हम लगभग चार सौ वर्ष बाद पुनर्स्थापित कर पाए एवं इसके संरक्षण एवं संवर्धन का मार्ग प्रशस्त कर पाए।

राशिफल रविवार 19 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 5:30 तक, अतिगंड योग रात्रि 1:57 तक, तैतिल करण प्रात: 7:31 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। अमृत सिद्धि योग सायं 5:30 से सूर्योदय तक है। रवियोग सायं 5:30 से आरम्भ होगा। आज सायन कुम्भ में सूर्य प्रवेश रात्रि 1:30 पर होगा। आज पंचमी तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:40 से 9:54 तक, लाभ-अमृत 9:59 से 12:37 तक, शुभ 1:57 से 3:16 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:54

मेष
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज धन हानि हो सकती है। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ
चन्